# 3 पेड़

बीज हज़ारों
आँखें मींचे
नम मिट्टी की
चादर ओढ़े
**महटियाए** से
अपने बिस्तर में पड़े
हुए हैं।

कान पकड़कर
सूरज जब
हौले-से धकियाएगा
हड़बड़ करते भागेंगे,
मंजन कर
चाय पिएँगे
धरती के रोशनदानों से
चोरी-चोरी झाँकेंगे
हरे सूट में
भौंचक्के से
एक नई दुनिया
पहचानेंगे।

हवा कहेगी झूम-झूम
वे रुमझुम-रुमझुम नाचेंगे
थक जाएँगे,
पोंछ पसीना
पानी पीकर

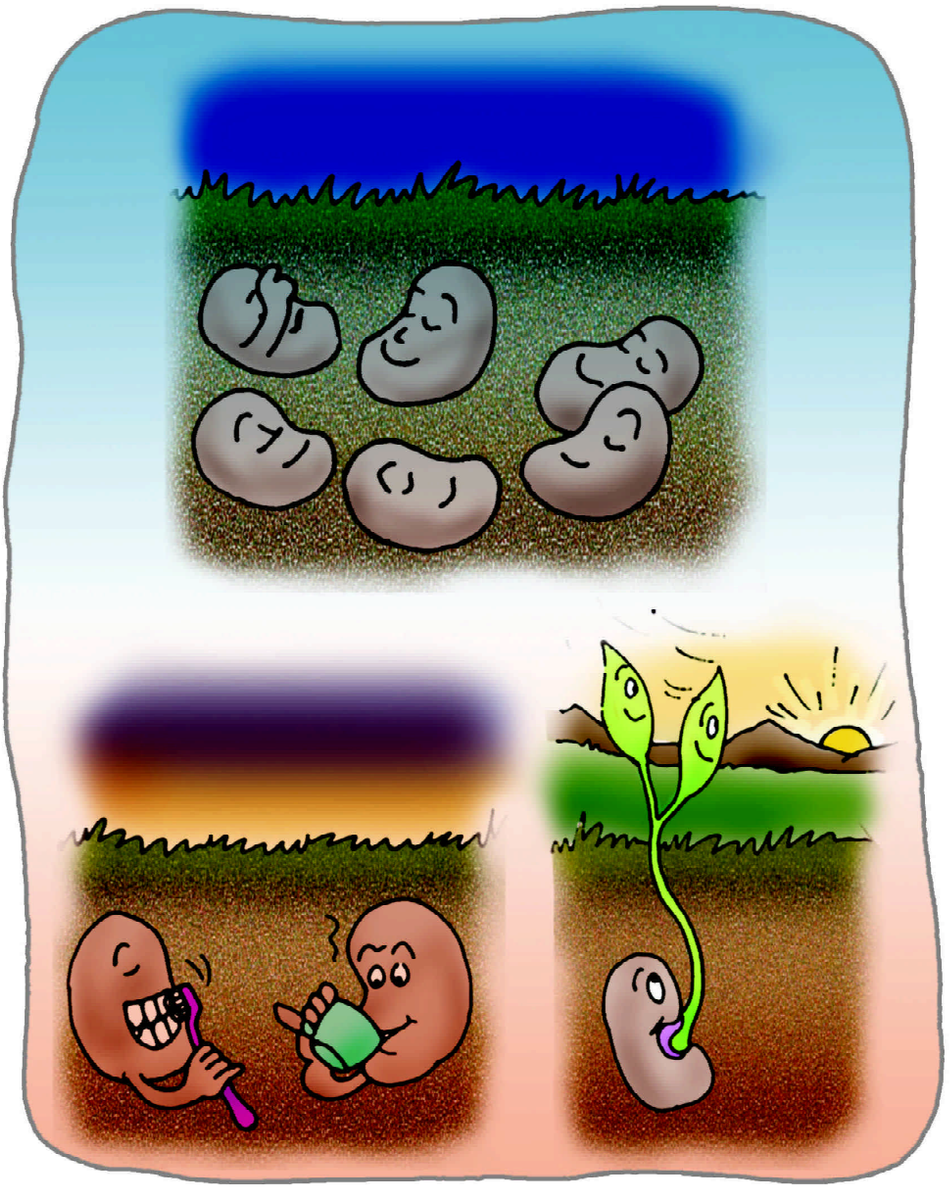

**शब्दार्थ: महटियाए**–मिट्टी से ढके हुए

भरी धूप में
पत्तों की थाली से
खाना खाएँगे।

फिर खेलेंगे
चिड़ियों के संग
तोतों से
चोंच लड़ाएँगे
पीठ खुजाएगी गइया
बच्चे छाँव में खेलेंगे।

धीरे-धीरे धूप ढलेगी
शाम सजेगी
पंछी घर को लौटेंगे
सुख-दुख के किस्से
बतियाकर
लंबी चादर तानेंगे।

चंदा चमकेगा
तारों की जगर-मगर में
जुगनू की लपर-झपर में
सभी पेड़
सो जाएँगे
हरी-भरी धरती के
सुंदर सपनों में
खो जाएँगे।

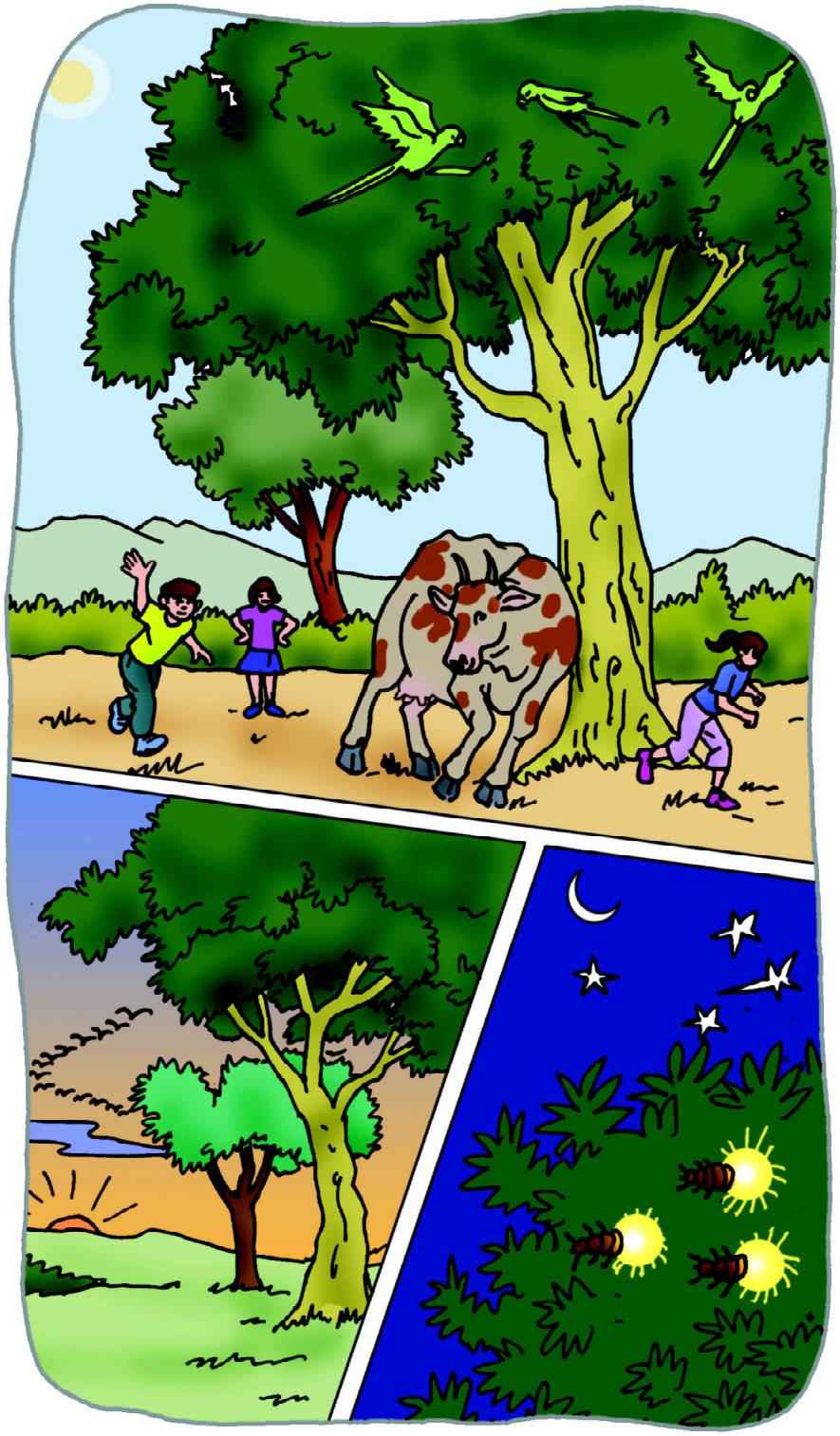

–विजय गुप्त

## अभ्यास

### पाठ में से

1. **कविता में किसकी दिनचर्या का वर्णन किया गया है? सही ( ✔ ) का निशान लगाइए–**

   ☐ बच्चे ☐ पेड़ ☐ चिड़िया

2. हज़ारों बीज आँखें मींचकर क्या कर रहे हैं?
3. पेड़ किस समय और कैसे खाना खाएँगे?
4. शाम होने पर पक्षी क्या करते हैं?
5. रात को सोते समय पेड़ कौन-से सपनों में खो जाएँगे?

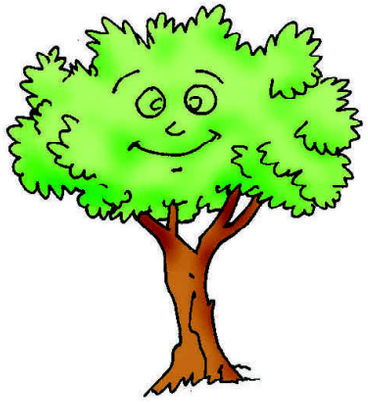

6. **रिक्त स्थान भरिए–**

   कान पकड़कर
   ..... जब
   हौले-से धकियाएगा
   हड़बड़ करते .....।
   मंजन कर
   ..... पिएँगे
   ..... के रोशनदानों से
   चोरी-चोरी .....
   हरे सूट में
   ..... से
   एक नई .....
   पहचानेंगे।

**7. कविता में इन शब्दों का क्या मतलब है?**

(क) चादर तानना .....

(ख) महटियाए से .....

(ग) जुगनू की लपर-झपर .....

(घ) पत्तों की थाली से खाना खाना .....

## बातचीत के लिए

1. पक्षी कहते हैं कि हम शाम को अपने सुख-दुख की बातें एक-दूसरे से कहते हैं। आप अपने मन की बातें किसे बताते हैं?
2. पेड़ अपना खाना कैसे बनाते हैं? पता कीजिए और फिर कक्षा में चर्चा कीजिए।
3. पेड़ों की तरह आप भी तो सपने ज़रूर देखते होंगे। अपने किसी ऐसे सपने के बारे में बताइए जो आपको बहुत अच्छा लगा हो।
4. पेड़ हमारे मित्र हैं—चर्चा कीजिए।

## भाषा की बात

**1. भागेंगे, पिएँगे, झाँकेंगे, नाचेंगे, जाएँगे-काम वाले अर्थात् 'क्रिया' शब्द हैं। इन क्रिया शब्दों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए–**

**2. पाठ में आए कोई छह युग्म-शब्द लिखिए–**

(क) ..... (घ) .....

(ख) ..... (ङ) .....

(ग) ..... (च) .....

**3. नीचे लिखे शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द पाठ में से ढूँढकर लिखिए–**

(क) संसार..... (ग) जल .....

(ख) वायु ..... (घ) सूर्य .....

## जीवन मूल्य

पेड़ों का जीवन दूसरों की भलाई के लिए होता है, क्योंकि वे धरती को हरा-भरा रखते हैं। छाया, फल, फूल, शुद्ध वायु आदि देते हैं। उनमें पक्षी अपना घोंसला बनाकर रहते हैं।

- पेड़ों की तरह हमें भी परोपकारी बनना चाहिए, क्यों?

## कुछ करने के लिए

1. पता कीजिए की बीज पेड़ कैसे बन जाते हैं? उन्हें पेड़ बनने के लिए किन-किन चीज़ों की ज़रूरत होती है?

2. **अलग-अलग तरह के पेड़ों के चित्र चिपकाइए व उनके नाम लिखिए–**

( केवल पढ़ने के लिए )

# 4 पूरे एक हज़ार

मुल्ला नसीरूद्दीन रोज़ सुबह अपने आँगन में प्रार्थना करता था और चिल्लाकर कहता था–''या अल्लाह! मुझे एक हज़ार दीनार दे। हज़ार यानी हज़ार। न एक कम न एक ज़्यादा। तू 999 भी देगा तो मैं उसे हाथ तक नहीं लगाऊँगा। सुन लेना।''

मुल्ला की प्रार्थना उसके पड़ोसी रहीम चाचा रोज़ सुनते थे। उन्होंने सोचा देखें मुल्ला सच कह रहा है या झूठ। एक दिन मुल्ला प्रार्थना कर रहा था कि रहीम चाचा ने एक थैली में 999 दीनार डालकर मुल्ला के आगे फेंक दी और छुपकर देखने लगे कि अब मुल्ला क्या करता है।

मुल्ला ने प्रार्थना के बाद आँखें खोलीं तो सामने थैली पड़ी पाई। इधर-उधर देखा। कोई नहीं। उसने हाथ उठाकर खुशी से अल्लाह का शुक्रिया अदा किया। फिर थैली खोलकर सिक्के गिने तो 999 निकले।

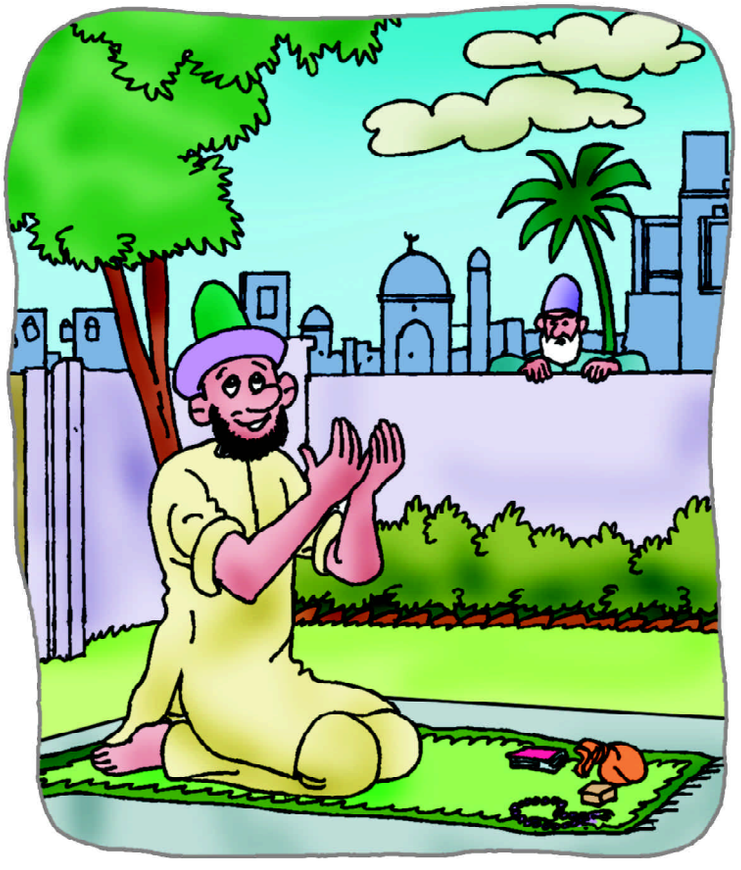

''तो आखिर तूने 999 ही दिए।'' कहकर मुल्ला ने थैली उठाई और घर में रख दी।

दो दिन हुए, चार दिन हुए, अब मुल्ला न तो पहले की तरह प्रार्थना करता न थैली बाहर निकालता। आखिर रहीम चाचा से रहा नहीं गया। वे मुल्ला के पास गए और बोले, ''क्या बात है आजकल प्रार्थना बंद है?''

मुल्ला ने कहा, ''पता नहीं कौन कम्बख़्त मेरे आगे 999 दीनार वाली थैली फेंक गया। अल्लाह तो गणित में इतना कच्चा हो नहीं सकता।''

''वह थैली भी मेरी है और 999 दीनार भी,'' रहीम चाचा ने कहा।

''क्या बात करते हो? तुम क्यों ऐसा करोगे भला?''

''मैं देखना चाहता था कि तू सच बोल रहा है या झूठ। तू कहता था कि 999 भी हुए तो तू हाथ नहीं लगाएगा। लेकिन तूने चुपचाप थैली लेकर घर में रख ली। पकड़ा गया न झूठ?''

''लेकिन तुम्हें मेरे और मेरे अल्लाह के बीच पड़ने की ज़रूरत क्या थी?'' मुल्ला ने कहा।

''ठीक है। भूल हुई। लौटा दे मेरी थैली,'' रहीम चाचा ने कहा।

''कौन-सी थैली?''

''वही जिसमें 999 दीनार हैं।''

''वह तो अल्लाह ने मुझे दी है। जो गणित में कच्चा नहीं है, उससे भी गिनने में भूल हो सकती है।''

रहीम चाचा अपना-सा मुँह लेकर चले गए।

दूसरे दिन फिर आए और बोले, ''ऐसा करते हैं, हम शहर काज़ी के पास चलते हैं। उन्हें सारी बात बता देते हैं। फिर वह जो इंसाफ़ करें। बोल, मंज़ूर है?''

मुल्ला ने कहा, ''मंज़ूर है। मगर एक समस्या है।''

''क्या?'' रहीम चाचा ने पूछा।

''मेरे पास ढंग के कपड़े नहीं हैं। काज़ी के पास क्या ऐसे ही फटे-हाल जाऊँगा?''

''चल एक दिन के लिए कपड़े मैं दे दूँगा।''

''एक और समस्या है। मुझसे इतनी दूर पैदल नहीं जाया जाएगा।''

''चल मेरा गधा ले लेना।''

''ठीक है।''

तो दूसरे दिन दोनों पहुँचे शहर काज़ी के पास। रहीम चाचा ने काज़ी को पूरी **दास्तान** सुनाई और अंत में कहा, ''थैली मेरी है, मुझे वापस दिलवाई जाए।''

---

**शब्दार्थ:** **दास्तान**–कहानी

''तुम्हारा कोई गवाह है?'' काज़ी ने पूछा।

गवाह तो रहीम चाचा का कोई नहीं था।

काज़ी कुछ कहते उससे पहले ही मुल्ला बोला, ''हुज़ूर! दूसरे की चीज़ को अपनी बताना इनकी आदत है। अभी थैली को अपना बता रहे हैं, कुछ देर बाद कहेंगे मैंने जो कपड़े पहन रखे हैं, वे भी इनके हैं।''

''हाँ तो हैं ही। मेरे ही तो हैं ये कपड़े,'' रहीम चाचा ने कहा।

''देखा? देखा हुज़ूर! अब ये कपड़े भी इनके हो गए। अब कहेंगे वह गधा भी इनका है जिस पर बैठकर मैं आया हूँ।''

''हाँ तो गधा तो मेरा है ही,'' रहीम चाचा ने भोलेपन से कहा।

''अब आप ही इंसाफ़ करें, हुज़ूर!'' नसीरूद्दीन ने नम्रता से कहा।

''काज़ी ने रहीम चाचा को अपनी आदत से बाज़ आने को कहा, अपना वक्त बिगाड़ने के लिए उन्हें डाँटा और थैली मुल्ला को दे दी।

अपना-सा मुँह लेकर रहीम चाचा लौट आए। थैली भी गँवाई, कपड़ों और गधे से भी हाथ धो बैठे।

चार-पाँच रोज़ गुज़र गए।

फिर एक दिन मुल्ला नसीरूद्दीन रहीम चाचा के घर गए और बोले, ''ये लो तुम्हारी थैली, ये कपड़े और ये सँभालो अपना गधा। लेकिन एक बात हमेशा ध्यान में रखना। आइंदा, मेरे और अल्लाह के बीच में आने की कोशिश मत करना।''

# 5 दो पहलवान

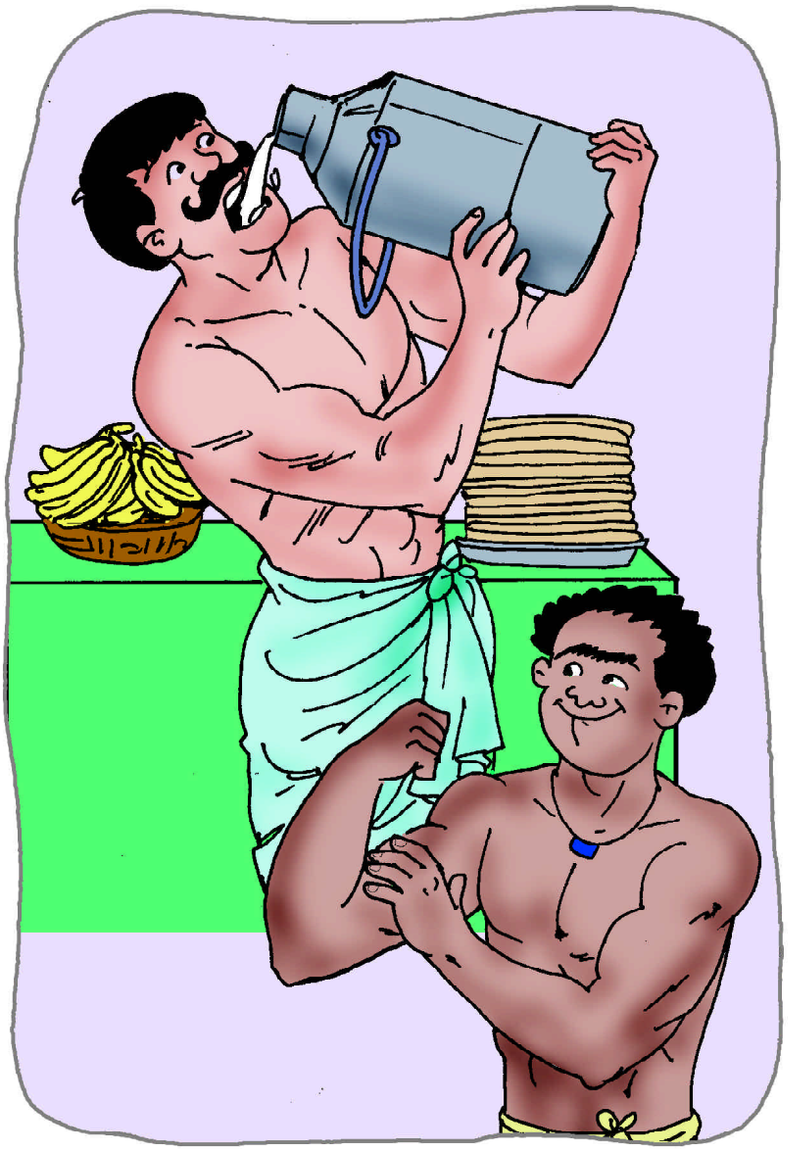

मुखजोर सिंह और धरतीपटक सिंह दो नामी पहलवान थे। धरतीपटक सिंह ने अनेक **दंगलों** में बलशाली पहलवानों को हराकर अनेक पुरस्कार जीते थे। वह अपनी शक्ति को बनाए रखने के लिए घंटों व्यायाम करता और **पौष्टिक भोजन** करता। उसका भोजन **सामान्य** व्यक्ति द्वारा खाए जाने वाले भोजन से बहुत अधिक होता था। उसका नाम सुनकर अच्छे-अच्छे बलशाली पहलवानों के होश उड़ जाते थे। परंतु मुखजोर सिंह उसके नाम से बिलकुल नहीं डरता था। मुखजोर सिंह को कभी किसी ने कुश्ती लड़ते नहीं देखा था। इसके बावजूद उसकी प्रशंसा का डंका चारों ओर बजता था। धरतीपटक सिंह के दिल में मुखजोर सिंह को पटकने का बहुत बड़ा अरमान था। मुखजोर सिंह अकसर कहता, ''धरतीपटक सिंह को उसने कई बार पटका है। वह उसके नाम से ही डरता है।''

**शब्दार्थ: दंगल**–कुश्ती, **पौष्टिक भोजन**–ऐसा भोजन जिसमें शारीरिक विकास के लिए ज़रूरी सभी खनिज पदार्थ, विटामिन आदि हों, **सामान्य**–साधारण

उसकी डींग और शेखी भरी बातें सुन-सुनकर एक दिन धरतीपटक सिंह कुश्ती लड़ने के लिए उसके घर की ओर चल पड़ा।

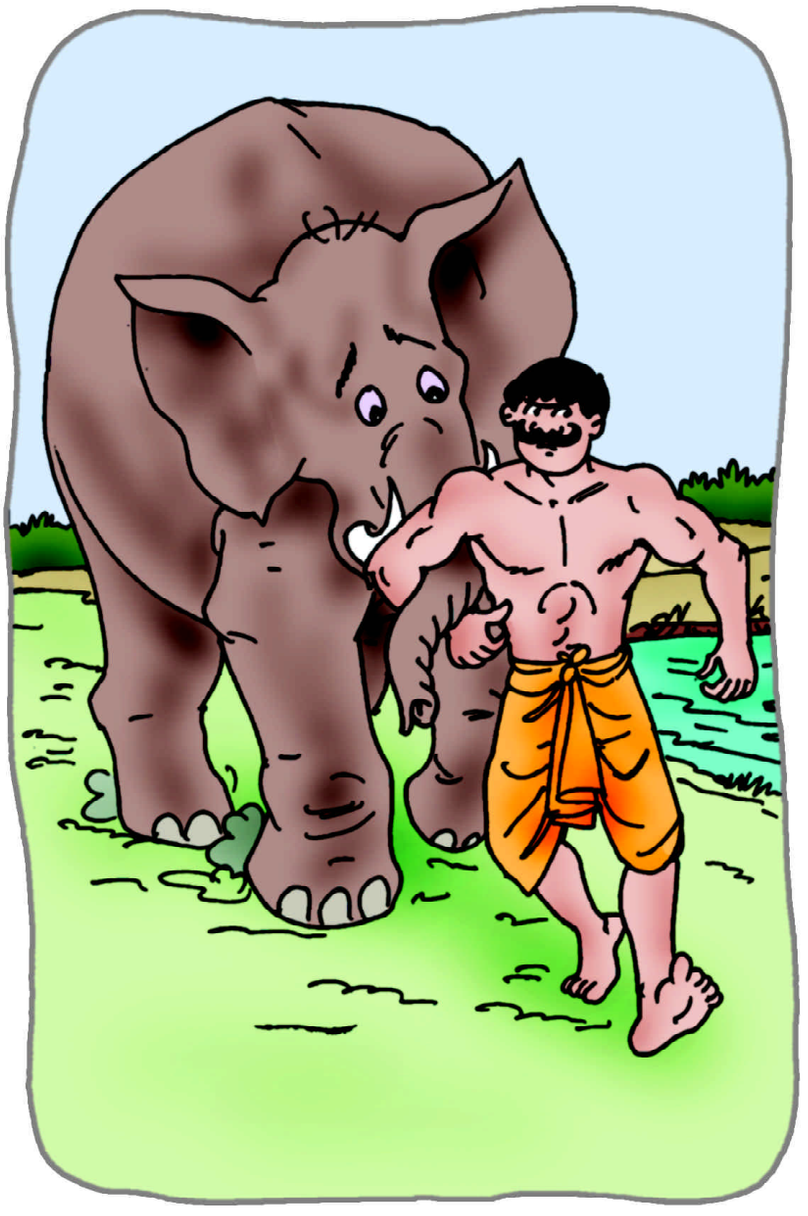

धरतीपटक सिंह ने रास्ते में रुककर एक ढाबे पर खाना खाया। उस ढाबे का सारा आटा वह एक बार में खा गया। फिर उसने एक तालाब पर पानी पीया। तालाब में बहुत कम पानी बचा। पेट भरने के बाद उसने डकार ली और तालाब के किनारे ही लेट गया। कुछ देर में ही उसे गहरी नींद आ गई।

उस तालाब पर प्रतिदिन एक हाथी पानी पीने आता था। उस दिन तालाब में पानी कम देखकर वह बहुत क्रोधित हुआ। वहाँ एक आदमी को सोता हुआ देखकर वह गुस्से से चिंघाड़ा। धरतीपटक सिंह की आँख खुली, वह तुरंत उठा और हाथी की सूँड़ को बगल में दबाकर मुखजोर सिंह के घर की ओर चल पड़ा।

मुखजोर सिंह के घर के सामने पहुँचकर वह ज़ोर से चिल्लाया, ''मुखजोर सिंह मेरे डर से कहाँ छिपा है? हिम्मत है तो सामने आ और मुकाबला कर, नहीं तो मेरे पाँव छूकर क्षमा माँग।''

मुखजोर सिंह ने धरतीपटक सिंह की आवाज़ सुनी तो वह डर के कारण पिछले दरवाज़े से भाग गया।

उसके जाने के बाद उसकी पत्नी ने ऊँचे स्वर में घर के भीतर से कहा, ''वे घर पर नहीं

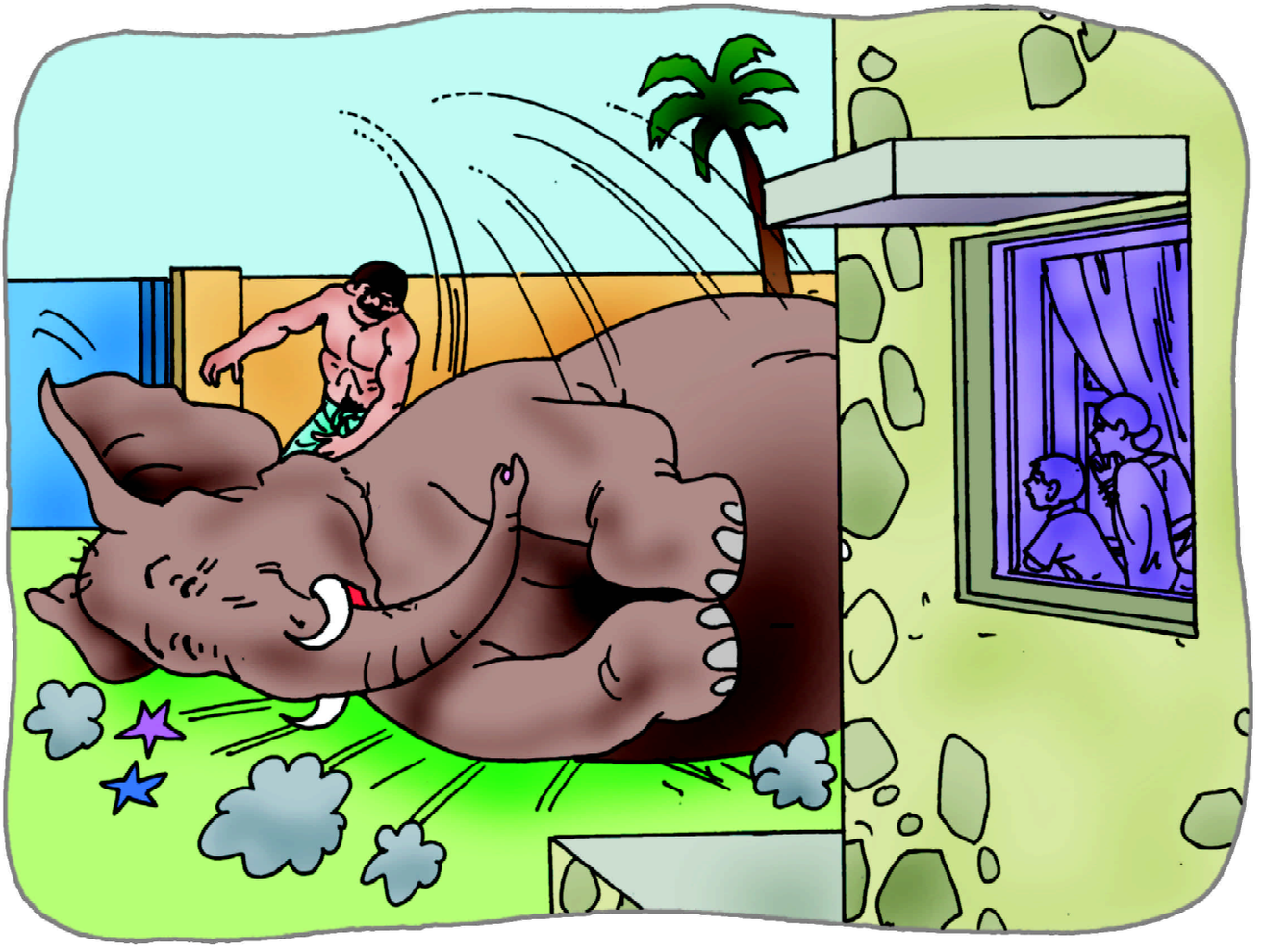

हैं। पहाड़ धकेलने बाहर गए हैं। आठ-दस दिन में आएँगे।''

यह सुनकर धरतीपटक सिंह ने हाथी उठाया और उसके आँगन में फेंकते हुए कहा, ''अपने पति से कहना कि मैं उसकी शक्ति देखना चाहता हूँ।''

आँगन में गिरे हाथी को देखकर घर में मौजूद मुखजोर सिंह की पत्नी और बेटा दोनों घबरा गए।

मुखजोर सिंह का बेटा बुद्धिमान था। वह अपने को सँभालते हुए ऊँचे स्वर में बोला, ''माँ, यह पागल आदमी कौन है? इसने हमारे आँगन में चूहा क्यों फेंका है? इस चूहे का मैं क्या करूँ?''

उसकी माँ ने समझदारी दिखाते हुए कहा, ''बेटा घबराने की कोई बात नहीं। अपने पिता को आने दे, उनके आते ही यह पागल दुम दबाकर भाग जाएगा। इस चूहे को झाड़ू से बाहर कर दे।''

आँगन में झाड़ू की आवाज़ धरतीपटक सिंह के कानों में पड़ी। इसके बाद फिर मुखजोर सिंह के बेटे का स्वर उभरा, ''माँ यह चूहा तो नाली में गिर गया!''

धरतीपटक सिंह सोचने लगा कि जब उसका बेटा इतना बलशाली है तो हो सकता है कि वह खुद मेरे जितना या मुझसे अधिक बलशाली हो। यह सोचकर वह थोड़ा भयभीत हुआ। अपने भय पर **नियंत्रण** रखते हुए उसने घर के बाहर खड़े एक खजूर के पेड़ को उखाड़कर ऊँचे स्वर में कहा, ''अपने पिता से कहना मुझे एक छड़ी चाहिए थी इसलिए मैं बाहर खड़े पेड़ को ले जा रहा हूँ।''

मुखजोर सिंह के बेटे ने चिल्लाते हुए कहा, ''माँ देखो, यह पागल मेरे पिता की दातुन लेकर भाग रहा है।''

पेड़ को दातुन कहते सुनकर धरतीपटक सिंह की आँखें फटी की फटी रह गईं। उसे विश्वास हो गया कि मुखजोर सिंह से कुश्ती लड़ने पर उसे हार का सामना करना ही पड़ेगा। यह सोचते ही वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

कुछ देर बाद मुखजोर सिंह घर लौटा और अपने बेटे से पूछा, ''कहाँ गया वह **गप्पी**?''

बेटे ने उत्तर दिया, ''वह हमारा खजूर का पेड़ उखाड़कर भाग गया।''

उसने क्रोधित स्वर में कहा, ''मेरा बेटा होकर भी तूने मेरा नाम डुबो दिया। उसे करारा जवाब

---

**शब्दार्थ: नियंत्रण**–काबू, **गप्पी**–बिना आधार के बढ़-चढ़कर बातें करने वाला

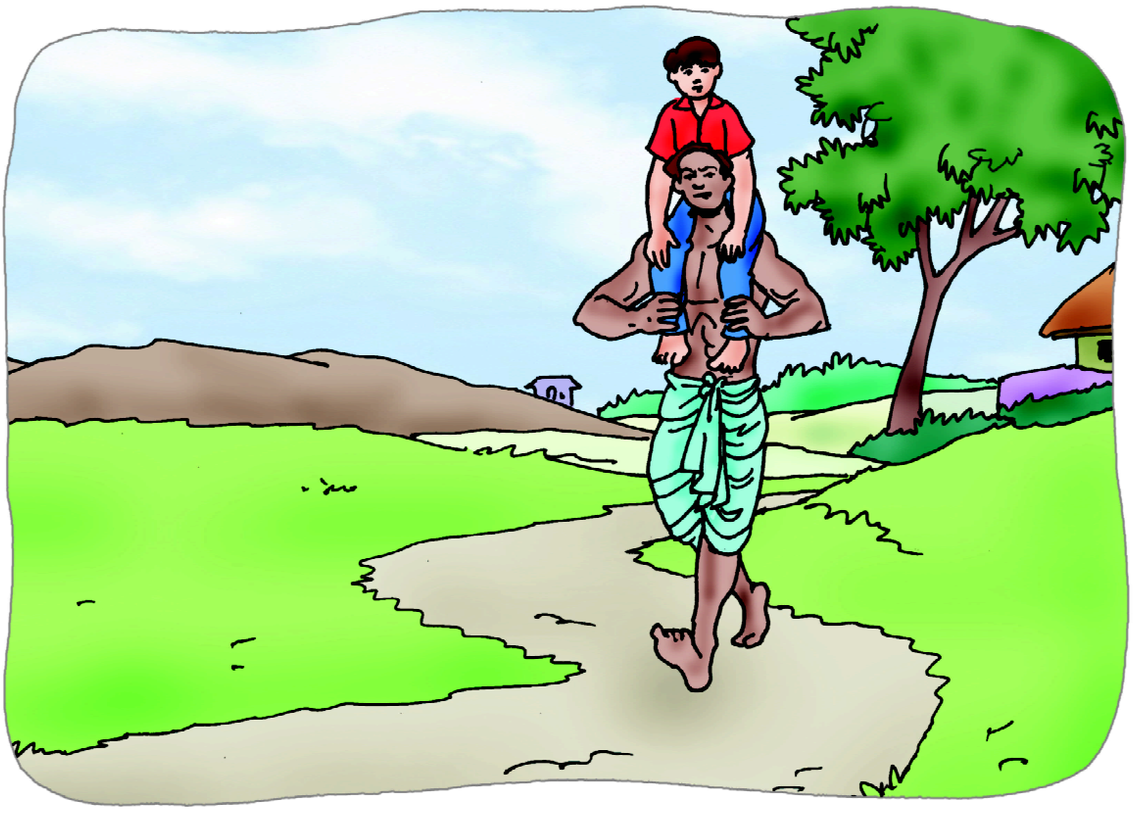

क्यों नहीं दिया? तुझे मैं अभी नदी में फेंककर आता हूँ।''

मुखजोर सिंह ने अपने बेटे को कंधे पर बिठा लिया और नदी की तरफ़ चल पड़ा। नदी गाँव से बहुत दूर थी। वह पैदल चलते हुए सोच रहा था कि यदि उसका बेटा रास्ते में रोएगा तो वह समझा कर उसे क्षमा कर देगा। परंतु उसका बेटा आराम से कंधे पर बैठा रहा।

मुखजोर सिंह ने उसे डराने के लिए कहा, ''नदी पास ही है!''

बेटे ने कहा, ''हाँ पिताजी, मुझे भी लहरें उठती हुई दिखाई दे रही हैं।''

बेटे का कथन सुनकर उसका क्रोध शांत हुआ। उसने उसे कंधे से उतारा और पूछा, ''मुझे सच-सच बता, तूने उस आदमी से कुछ कहा या नहीं?''

बेटे ने उत्तर दिया, ''मैंने उसे कुछ नहीं कहा परंतु अपनी माँ से कहा था कि एक पागल आदमी मेरे पिता की दातुन लेकर भाग रहा है।''

मुखजोर सिंह ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, ''बेटे, एक दिन तू दुनिया में अवश्य मेरा नाम रोशन करेगा।''

# अभ्यास

## पाठ में से

1. धरतीपटक सिंह अपनी शक्ति बनाए रखने के लिए क्या-क्या करता था?
2. मुखज़ोर सिंह अपने घर से क्यों भाग गया?
3. हाथी को आँगन में गिरा देख माँ ने क्या कहा?
4. मुखज़ोर सिंह ने अपने बेटे को नदी में फेंकने की बात क्यों की?

**5. पाठ के आधार पर उचित शब्द छाँटकर रिक्त स्थान भरिए–**

(क) मुखजोर सिंह और धरतीपटक सिंह दो नामी ..... थे। (पहलवान/तीरंदाज़)

(ख) मुखजोर सिंह को कभी किसी ने ..... लड़ते नहीं देखा था। (युद्ध/कुश्ती)

(ग) धरतीपटक सिंह ने ..... में रुककर एक ढाबे पर खाना खाया। (भवन/रास्ते)

(घ) मुखजोर सिंह का बेटा ..... था। (बुद्धिमान/डरपोक)

**6. कहानी में जो घटनाएँ जिस क्रम में घटी, उस क्रम से उन घटनाओं को क्रमांक दीजिए–**

(क) धरतीपटक सिंह ने तालाब पर पानी पीया. ☐

(ख) मुखजोर सिंह धरतीपटक सिंह की आवाज़ सुनकर भाग गया। ☐

(ग) मुखजोर सिंह के बेटे ने पेड़ को दातुन बताया। ☐

(घ) मुखजोर सिंह के बेटे ने कहा कि उनके आँगन में किसी ने चूहा फेंका है। ☐

(ङ) धरतीपटक सिंह कुश्ती लड़ने के लिए मुखजोर सिंह के घर गया। ☐

(च) मुखजोर सिंह ने अपने बेटे की पीठ थपथपाई। ☐

(छ) धरतीपटक सिंह भाग खड़ा हुआ। ☐

## बातचीत के लिए

1. धरतीपटक सिंह मुखजोर सिंह के घर से क्यों भाग खड़ा हुआ?
2. क्या मुखजोर सिंह सच में ताकतवर व निडर पहलवान था? चर्चा कीजिए।
3. कहानी में पेड़ को छड़ी भी कहा है और दातुन भी। क्यों?
   आप इन्हें क्या-क्या कहेंगे–रस्सी, हाथी
4. कहानी 'दो पहलवान' को मुखजोर सिंह के बेटे की नज़र से कहिए–
   मेरे पिताजी मुखजोर सिंह बहुत नामी पहलवान थे। एक पहलवान और था। उसका नाम था–धरतीपटक सिंह।
   अब आगे की कहानी आप कहिए।

## अनुमान और कल्पना

1. धरतीपटक सिंह के हाथी को मुखजोर सिंह के आँगन में फेंक देने पर हाथी का क्या हुआ होगा?
2. अगर धरतीपटक सिंह मुखजोर सिंह से कुश्ती लड़ने में हार जाता तो क्या होता?

## भाषा की बात

**1. ध्यानपूर्वक पढ़िए–**

- विशेषता बताने वाले शब्दों को **विशेषण** कहते हैं।
- जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है उन्हें **विशेष्य** कहते हैं।

**उदाहरण–**

नामी पहलवान– इसमें नामी शब्द **विशेषण** है और पहलवान शब्द **विशेष्य**

**अब आप पाठ में आए चार विशेषण व विशेष्य शब्द लिखिए–**

| | विशेषण | विशेष्य |
|---|---|---|
| (क) | .....सारा..... | .....आटा..... |
| (ख) | ..... | ..... |
| (ग) | ..... | ..... |
| (घ) | ..... | ..... |
| (ङ) | ..... | ..... |

**2. पाठ में से इन शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द ढूँढकर लिखिए–**

(क) सरोवर..... (ख) गृह.....

(ग) दिवस..... (घ) साहस.....

## जीवन मूल्य

1. मुखजोर सिंह का बेटा बुद्धिमान था।

   उसकी माँ ने समझदारी दिखाते हुए कहा, ''बेटा घबराने की कोई बात नहीं।''

- बुद्धिमानी और समझदारी से किए गए काम में सफलता प्राप्त होती है, क्यों?

2. मुखजोर सिंह का बेटा इतना बलशाली है तो हो सकता है कि वह खुद मेरे जितना या मुझसे अधिक बलशाली हो। यह सोचकर वह थोड़ा भयभीत हआ।

- जीवन में भयभीत होना उचित है या अनुचित?
- हमें अपने भय पर नियंत्रण करने के लिए क्या-क्या करना चाहिए?

## कुछ करने के लिए

**1. हम सबको भी स्वस्थ रहने के लिए पौष्टिक व संतुलित भोजन करना चाहिए। पौष्टिक भोजन में कौन-कौन से पौषक तत्वों का होना ज़रूरी है? वे हमें क्या-क्या खाने से मिलते हैं? नीचे दी गई तालिका में लिखिए–**

| पोषक तत्वों के नाम | खाना जिसमें पाए जाते हैं |
|---|---|
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |
| ..... | ..... |

2. नीचे खाने की कुछ चीज़ों के चित्र दिए गए हैं। इन्हें पहचानकर इनके नाम लिखिए। इनमें से जो पौष्टिक हैं और जिन्हें खाने से सेहत ठीक रहती है, उन पर ( Ö ) का निशान लगाइए–







................................... ................................... ...................................

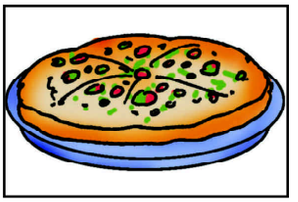

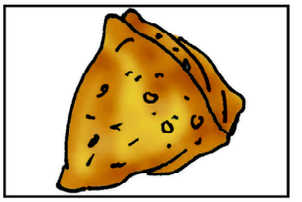

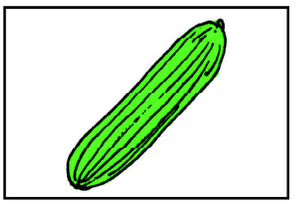

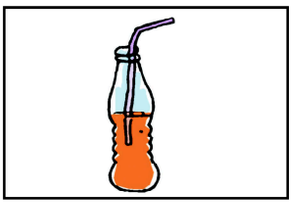

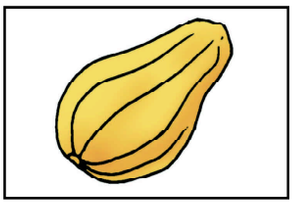

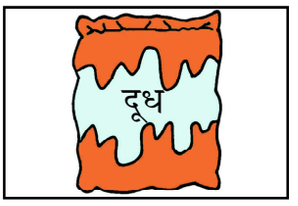

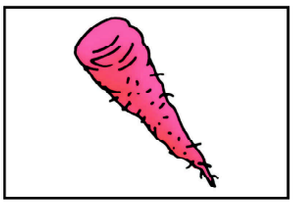







................................... ................................... ...................................








................................... ................................... ...................................